कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 33–34

मेंथा की लाभकारी खेती

मो0 मुईद[1], शरद कुमार[2] एवं धनंजय कुमार[3]
[1,2]कृषि विभाग, इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ
[3]परियोजना सहायक (सी एस आई आर–सी मैप, लखनऊ), उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: mmued@iul.ac.in

आज बदलते समय के साथ लोग खेती में नए–नए प्रयोग कर बेहतर आमदनी कमा रहे हैं। जिसमें औषधीय पौधों की खेती भी किसानों के लिए बेहतर कमाई का जरिया बन रही है. यदि किसी किसान का रूझान औषधीय पौधों की खेती की ओर हो रहा है और वह पारंपरिक खेती के साथ–साथ बेहतर आय भी अर्जित करना चाहता है।

मेंथा की खेती बदायूँ, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली, पीलीभीत, बाराबंकी, फैजाबाद, अम्बेडकर नगर, लखनऊ आदि जिलों में किसान बड़े पैमाने पर करते हैं। पिछले कुछ वर्षों से मेंथा जायद की मुख्य फसल के रूप में अपनी जगह बना रहा है। इन जिलों में इसके तेल का उपयोग खुशबू के लिए और औषधियां बनाने में किया जाता है।

भूमि एवं भूमि की तैयारी

मेंथा की खेती के लिए अच्छे जल निकास और पीएच के साथ पर्याप्त कार्बनिक पदार्थ। 6–7.5 मान वाली बलुई दोमट और चिकनी दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। खेत की अच्छी तरह जुताई करने से भूमि समतल हो जाती है। मेंथा की रोपाई के तुरंत बाद खेत में हल्का पानी लगा दें ताकि मेंथा की पौध अच्छी तरह से जड़ पकड़ ले।

संस्तुत प्रजातियाँ

कोसी, सिम क्रांति, पंजाब गोल्ड और सिम उन्नति, इत्यादि ।

जड़ों को पौधशाला में लगाने का समय

मेन्था की जड़ों की बुवाई अगस्त माह में नर्सरी में कर देते हैं। नर्सरी को ऊँचे स्थान में बनाते है ताकि इसे जलभराव से रोका जा सके। अधिक वर्षा हो जाने पर जल का निकास करना चाहिए।

बुवाई/रोपाई का समय

सबसे पहले किसान को जनवरी से फरवरी महीने में नर्सरी तैयार करना होती है. सकर्स (मेंथा के जड़) को टुकड़ा–टुकड़ा करके लगाना चाहिए. अगर जिस किसान के पास खेत खाली हो वे मेन्था की फसल फरवरी मे भी लगा सकते है. समय से मेन्था की जड़ों की बुवाई का उचति समय 15 जनवरी से 15 फरवरी है। देर से बुवाई करने पर तेल की मात्रा कम हो जाती है व कम उपज मिलती है। देर बुवाई हेतु पौधों को नर्सरी में तैयार करके मार्च से अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक खेत में पौधों की रोपाई अवश्य कर देना चाहिए। विलम्ब से मेंथा की खेती के लिए कोसी प्रजाति का चुनाव करें।

भूस्तरियो (सकर्स) का शोधन

रोपाई के पूर्व भूस्तरियों को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर 5 मिनट तक डुबोकर शोधित करना चाहिए।

बुवाई की विधि

जापानी मेंथा की रोपाई के लिए लाइन की दूरी 30–40 सेमी. देशी पोदीना 45–60 सेमी. तथा जापानी पोदीना में पौधों से पौधों की दूरी 15 सेमी. रखना चाहिए। जड़ों की रोपाई 3 से 5 सेमी. की गहराई पर कूंड़ों में करना चाहिए। रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। बुवाईध्रोपाई हेतु 4–5 कुन्तल जड़ों के 8–10 सेमी. के टुकड़े उपयुक्त होते हैं। मेंथा का पौधा लगाने से पहले खेत को 2 से 3 बार जुताई कर देना चाहिए. अगर रासायनिक खाद का उपयोग किसान करना चाहता है. तो वह यूरिया, डीएपी का उपयोग कर सकता है। अगर वे जैविक विधि से करना चाहते हैं तो वह जैविक खाद का उपयोग करके खेत की सिंचाई कर दें। वहीं पौधे लगने के दौरान खेत में नमी या पानी होना चाहिए

और धान के पौधों की तरह लगाना चाहिए। लाईन से लाईन की दूरी डेढ़ फीट और पौधे से पौधे की दूरी एक फिट होना चाहिए। वहीं खेत में नमी बनाए रखने के लिए हर 10 से 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिए. मेन्था की खेती मे फसल प्रबंधन इस प्रकार होनी चाहिये ताकी फसल की कटाई मोन्सुन से पहले हर हाल मे हो जाना चाहिए।

उर्वरक की मात्रा

सामान्यतः उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के आधार पर किया जाना लाभदायक होता है। सामान्य परिस्थितियों में मेंथा की अच्छी उपज के लिए 120–150 किलोग्राम नाइट्रोजन 50–60 किग्रा. फास्फोरस 40 किग्रा.पोटाश तथा 20 किग्रा. सल्फर प्रति हे. की दर से प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस, पोटाश तथा सल्फर की पूरी मात्रा तथा 30–35 किग्रा. नाइट्रोजन बुवाईध्रोपाई से पूर्व कूंड़ों में प्रयोग करना चाहिए। शेष नाइट्रोजन को बुवाईध्रोपाई के लगभग 45 दिन, पर 70–80 दिन पर तथा पहली कटाई के 20 दिन पश्चात् देना चाहिए। डी.ए.पी. के साथ 200–250 किग्रा. जिप्सम प्रति हे. की दर से प्रयोग कर तेल की मात्रा बढ़ाई जा सकती है।

सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण

मेंथा में सिंचाई भूमि की किस्म तापमान तथा हवाओं की तीव्रता पर निर्भर करती है। मेंथा में पहली सिंचाई बुवाईध्रोपाई के तुरन्त बाद कर देना चाहिए। इसके पश्चात् 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए व प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई करना आवश्यक है। खरपतवार नियंत्रण रसायन द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेन्डीमेथलीन 30 ई.सी. के 3.3 लीटर प्रति हे. को 700–800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई/रोपाई के पश्चात् ओट आने पर यथाशीघ्र छिड़काव करें।

फसल सुरक्षा

दीमकः

दीमक जड़ों को क्षति पहुंचाती है, फलस्वरूप जमाव पर बुरा असर पड़ता है। बाद में प्रकोप होने पर पौधें सूख जाते है। खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरपाइरीफास 2.5 लीटर प्रति हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।

बालदार सूंड़ीः

यह पत्तियों की निचली सतह पर रहती है और पत्तियों को खाती है। जिससे तेल की प्रतिशत मात्रा कम हो जाती है। इस कीट से फसल की सुरक्षा के लिए डाइकलोर वास 500 मिली. या फेनवेलरेट 750 मिली. प्रति हे. की दर से 600–700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। झुन्ड में दिये गये अण्डों एवं प्रारम्भिक अवस्था में झुण्ड में खा रही सूंड़ियों को इक्कठा कर नष्ट कर देना चाहिए।

पत्ती लपेटक कीटः

इसकी सूड़ियां पत्तियों को लपेटते हुए खाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफास 36 ई. सी. 1.0 लीटर प्रति हे. की दर से 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग जड़गलनः

इस रोग में जड़े काली पड़ जाती है। जड़ों पर गुलाबी रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। बुवाई/रोपाई से पूर्व भूस्तारियों का शोधन 0.1% कार्बेन्डाजिम से इस रोग का निदान हो जाता है। इसके अतिरिक्त रोगमुक्त भूस्तारियों का प्रयोग करें।

पर्णदागः

पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे दिखाई पड़ते हैं। इससे पत्तियां पीली पड़कर गिरने लगती हैं। इस रोग के निदान के लिए मैंकोजेब 75 डब्लू पी नामक फफूंदीनाशक की 2 किग्रा. मात्रा 600–800 लीटर में मिलाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

कटाई

मेंथा फसल की कटाई प्रायः दो बार की जाती है। पहली कटाई के लगभग 100–120 दिन पर (जब पौधों में कलियां आने लगे) की जाती है। पौधों की कटाई जमीन की सतह से 4–5 सेमी. ऊँचाई पर करनी चाहिए। दूसरी कटाई, पहली कटाई के लगभग 70–80 दिन पर करें। कटाई के बाद पौधों को 2–3 घन्टे तक खुली धूप में छोड़ दें तत्पश्चात् कटी फसल को छाया में हल्का सुखाकर जल्दी आसवन विधि द्वारा यंत्र से तेल निकाल लें।

उपज

दो कटाइयों में लगभग 250–300 कुन्तल शाक या 125–150 किग्रा. तेल प्रति हे. प्राप्त होता है। और बाजार में 1000 रुपए लीटर भाव है। वहीं सबसे बड़ी बात ये है कि इसे आवरा पशु भी नहीं खाते हैं।

प्रभावी बिन्दु

फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें अथवा जड़ों को शोधित करके ही बुवाई/रोपाई करें।